जितना करेंगे बाप को याद
उतना ही फिर पाप कटेंगे
विदेही बन,विचित्रता के धर्म में टिकना
स्वधर्म में टिको,देह-अभिमान में नही आना
बाप बंधाय्मान है संगम पर आकर पतित को पावन बनाने
विचित्र लीगल मत पर चलना
उंच है पढाई ,डिफिकल्ट भी, मेहनत करनी
दृढ़ निश्चयी होते सदा विजयी
निश्चय से हलचल हो नही सकती
अचल ही स्नेही बनते
ब्रह्मा की भुजाओं में समायें रहते
परमात्म प्यार है- सर्व खजानों की चाबी

मेरा बाबा
ॐ शांति